जादुई गधा

जादुई गधा

"पोलो, काश तुम बात कर पाते," एल्फ्रेडो ने कहा. पोलो चीनी खाने लिए एल्फ्रेडो का हाथ चाट रहा था.

पोलो एक सिलेटी रंग का गधा था. एल्फ्रेडो उसका मालिक था. वे मैक्सिकन पहाड़ियों की घाटी में बसे एक गाँव के छोटे खेत में रहते थे. एल्फ्रेडो के दो अन्य भाई थे, लेकिन वे बहुत कम ही दिखते थे क्योंकि वे हमेशा काम करते होते थे. इसलिए एल्फ्रेडो और पोलो एक-दूसरे के पक्के दोस्त बन गए. इसका एक कारण और भी था - एल्फ्रेडो के साथ खेलने वाला और कोई नहीं था. वे एक अन्य कारण से भी दोस्त थे - वे एक-दूसरे को बहुत चाहते थे. पोलो, एल्फ्रेडो की पीठ पर बैठकर और उसकी गर्दन कसकर पकड़कर खेतों के बीच में दौड़ लगाता था और फिर वे पेड़ों की छाया में आराम करते थे.

हमेशा साथ रहने के कारण गाँव के लड़के पोलो और एल्फ्रेडो का मज़ाक उड़ाते थे. सच्चाई यह थी कि वे खुद भी पोलो से दोस्ती करना चाहते थे, परन्तु यह बात वो एल्फ्रेडो को कभी नहीं बताते थे. इसकी बजाय लड़के पोलो और एल्फ्रेडो पर ताने कसते थे और उन्हें चिढ़ाते थे.
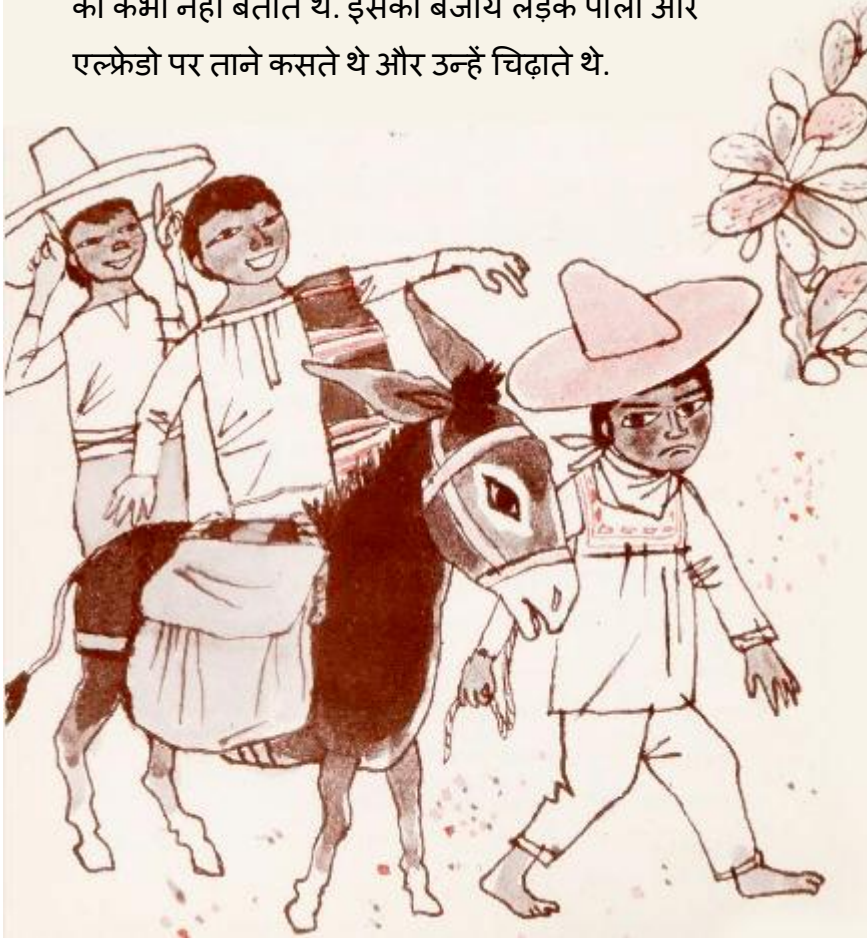
"अरे, गधा लड़का!" वे चिल्लाते. "अरे, बड़े कान वाले!“
यह सुनकर एल्फ्रेडो का चेहरा गुस्से से लाल हो जाता था और पोलो का सिर लटक जाता था. लेकिन फिर भी दोनों चुपचाप चलते रहते थे. "तुम दुखी मत हो, मेरे दोस्त," एल्फ्रेडो कहता. "तुम एक सुंदर गधे हो और मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ."
एल्फ्रेडो को अपनी दादी के घर जाना बहुत पसंद था. दादी दूर पहाड़ी पर रहती थीं और वहां जाने में एक घंटा लगता था. हर शनिवार को एल्फ्रेडो माँ की बनाई टॉरटियास (मक्का की रोटी) और पिताजी की गायों का ताज़ा दूध एक बड़ा चमड़े की थैली में लेता था. यह विशेष रूप से मजेदार था, क्योंकि पहाड़ी सड़क बहुत ऊबड़-खाबड़ थी. एल्फ्रेडो जब तक अपनी दादी के पास पहुंचता था, तब तक थैली के दूध के ऊपर मक्खन तैर रहा होता था! उस मक्खन को तुरंत मक्का की रोटी पर लगाकर खाया जा सकता था.
एक शनिवार की सुबह एल्फ्रेडो और पोलो ने दादी के घर जाने के लिए शुरु हुए. तभी उन्होंने जोर से आवाजें सुनीं, "अरे, गधे के बाप! तुम कहां जा रहे हो? ढेंचू! ढेंचू!!"

एल्फ्रेडो, पोलो की रस्सी पकड़े रहा और चलता रहा. तभी किसी ने सावधानीपूर्वक निशाना लगाकर एक पत्थर फेंका जो एल्फ्रेडो के कान के पास से गुज़रकर पोलो के पैर से टकराया.

"बूढ़ा गधा! लंबे कान!" दो आवाजें चिल्लायीं.

एल्फ्रेडो ने मुड़कर कार्लोस और होसे को देखा. जब भी उन्हें मौका मिलता यह दोनों लड़के उन्हें चिढ़ाते थे. कार्लोस ने अपने हाथों को अपने सिर के किनारों पर ऐसे रखा जैसे वे गधे के कान हों और उसने कहा, "ढेंचू! ढेंचू!" होसे ने भी वही किया जो कार्लोस ने किया.

"यह बंद करो!" एल्फ्रेडो चिल्लाया. "पोलो मेरा दोस्त है. वो एक अच्छा गधा है."

"हाँ, एक बूढ़ा बड़े-बड़े कानों वाला सिलेटी गधा!," कार्लोस ने कहा. फिर उसने एक छड़ी उठाई और पोलो की ओर दौड़ा. "चलो इस पुराने गधे को दौड़ाते हैं, होसे. छड़ी की मार से वो तेज़ दौड़ेगा."

"वो एक साधारण गधा नहीं है! वह एक जादुई गधा है!" एल्फ्रेडो ने गुस्से में कहा. "और तुम लोग उसे अकेला छोड़ दो!"
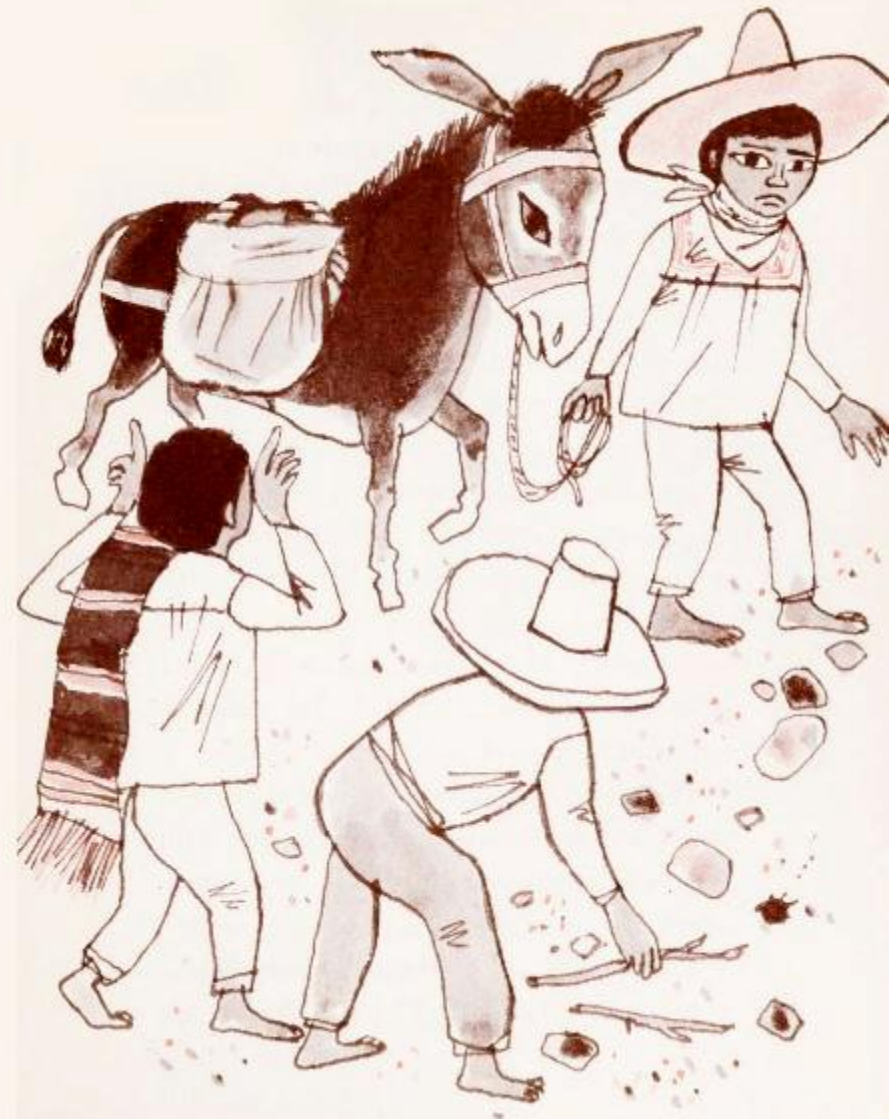
"जादुई गधा! उसमें केवल एक ही जादू है कि वो अपने बड़े कानों को गिरने से बचाए रखता है!" कार्लोस चिल्लाया. वो एल्फरेडो की और घुर्राया और फिर पोलो के करीब गया. होसे एक छड़ी लिए ठीक उसकी बगल में खड़ा था.

"मैं तुम्हें बताऊंगा कि उसमें क्या जादू है!" एल्फ्रेडो चिल्लाया.

"मेरा पोलो, दूध को मक्खन में बदल सकता है!"

"हा! हा!" लड़के हँसे. "हम अच्छी तरह से देखने के बाद ही इस बात पर यकीन करेंगे."

"ठीक है," एल्फ्रेडो ने कहा. "तुम न केवल इसे देखोगे, तुम इसका कुछ हिस्सा खा भी पाओगे." फिर वो लड़कों की ओर मुड़ा और बोला, "आओ और इस थैली को देखो. यह दूध से भरी है."

होसे और कार्लोस पोलो के पास गए और उन्होंने थैली में देखा.

"यह मक्खन नहीं है, यह तो सिर्फ दूध है," कार्लोस ने मुंह चिढ़ाते हुए कहा.

"यही तो मैंने कहा था," एल्फ्रेडो बोला. "लेकिन मैं तुमसे वादा करता हूं कि जब तक हम अपनी यात्रा खत्म करेंगे तब इस थैली में मक्खन होगा - और साथ में छाछ भी!"

"मैं वो ज़रूर देखना चाहूंगा," कार्लोस ने हंसते हुए कहा.

"तुम कहाँ जा रहे हो?" होसे से पूछा.

एल्फ्रेडो ने कहा, "मैं दादी के घर जा रहा हूँ. वो यहाँ से एक घंटे की दूरी पर रहती हैं."

"चलो हम भी साथ चलते हैं," कार्लोस ने कहा.

एल्फ्रेडो ने कहा, "हां, मैं चाहता हूं कि तुम हमारे साथ आओ. तब तुम देखोगे कि पोलो वास्तव में एक जादुई गधा है."
"अब, पोलो," एल्फ्रेडो फुसफुसाया, "हम उन्हें दिखाएंगे कि तुम दूध को मक्खन में कैसे बदलते हो!"
एल्फ्रेडो और पोलो चट्टानों के ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर ऊपर-नीचे चले. कार्लोस और होसे उनके पीछे-पीछे चले. अब फिर लड़कों ने चिढ़ाया, "अरे, जादुई गधे! क्या तुम दूध का मक्खन बना रहे हो?"
एल्फ्रेडो ने पोलो की पीठ थपथपाई. "मेरा जादुई गधा," उसने धीरे से कहा. वह थैली के अंदर बन रहे मक्खन के कोमल गोले को देख सकता था. उसे देखकर वो खुद पर मुस्कराया.

सूरज बहुत गर्म था और एल्फ्रेडो खुश था कि उसने अपनी छतरी जैसी बड़ी टोपी पहनी थी. उसने मुड़कर देखा कि होसे और कार्लोस एक पेड़ के नीचे छाया में आराम करने के लिए रुके थे.
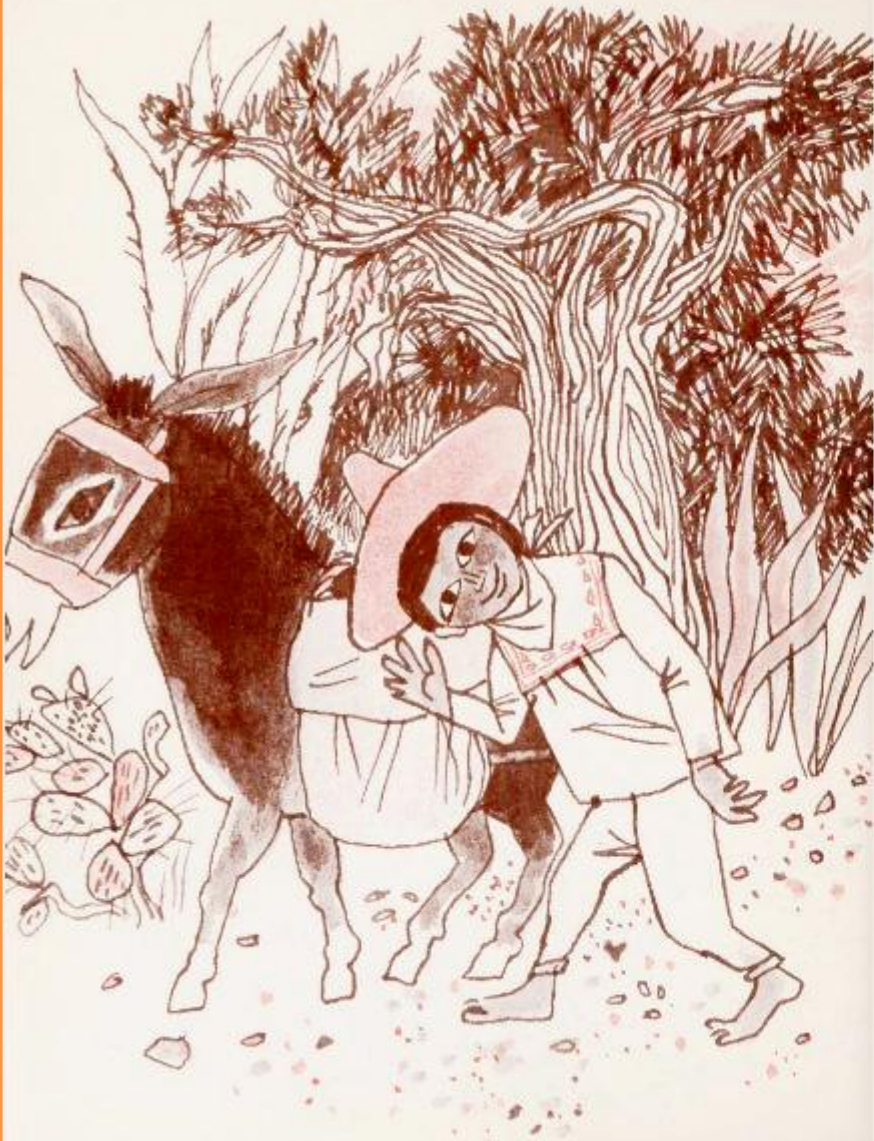
"मेरे पास एक जादुई गधा है, मेरे पास एक जादुई गधा है," एल्फ्रेडो ने गुनगुनाया. पोलो और एल्फ्रेडो ने अपनी यात्रा ज़ारी रखी.

अंत में एल्फ्रेडो को पेड़ों का वो झुरमुटा दिखा जो उसकी दादी के घर तक जाता था. जब वो चमड़े की थैली पर झुका और उसे हल्के-हल्के छपकों की आवाज़ें सुनाई दीं. उन्हें सुनकर वो मुस्कराया. मक्खन लगभग तैयार था!

"आराम करो, मेरे दोस्त." उसने पोलो से कहा. वे कुछ पेड़ों के नीचे आराम करने के लिए रुके. जल्द ही कार्लोस और होसे भी उनके पास आ गए.

"मेरे जादुई गधा ने कहा है कि मक्खन अब तैयार है," एक थैले से दो मक्के की रोटियों को खींचते हुए एल्फ्रेडो ने कहा, "यह लो, अब तुम लोग इन रोटियों पर मक्खन लगा सकते हो."

जब एल्फ्रेडो ने थैली खोली तो लड़के हंसने लगे. पर जब उन्होंने थैली के अंदर झाँका तो उनकी मुस्कुराहट जल्दी ही आश्चर्य में बदल गई. वहाँ, मीठे छाछ के ऊपर तैरती मक्खन की एक बड़ी सुनहरी गेंद थी.
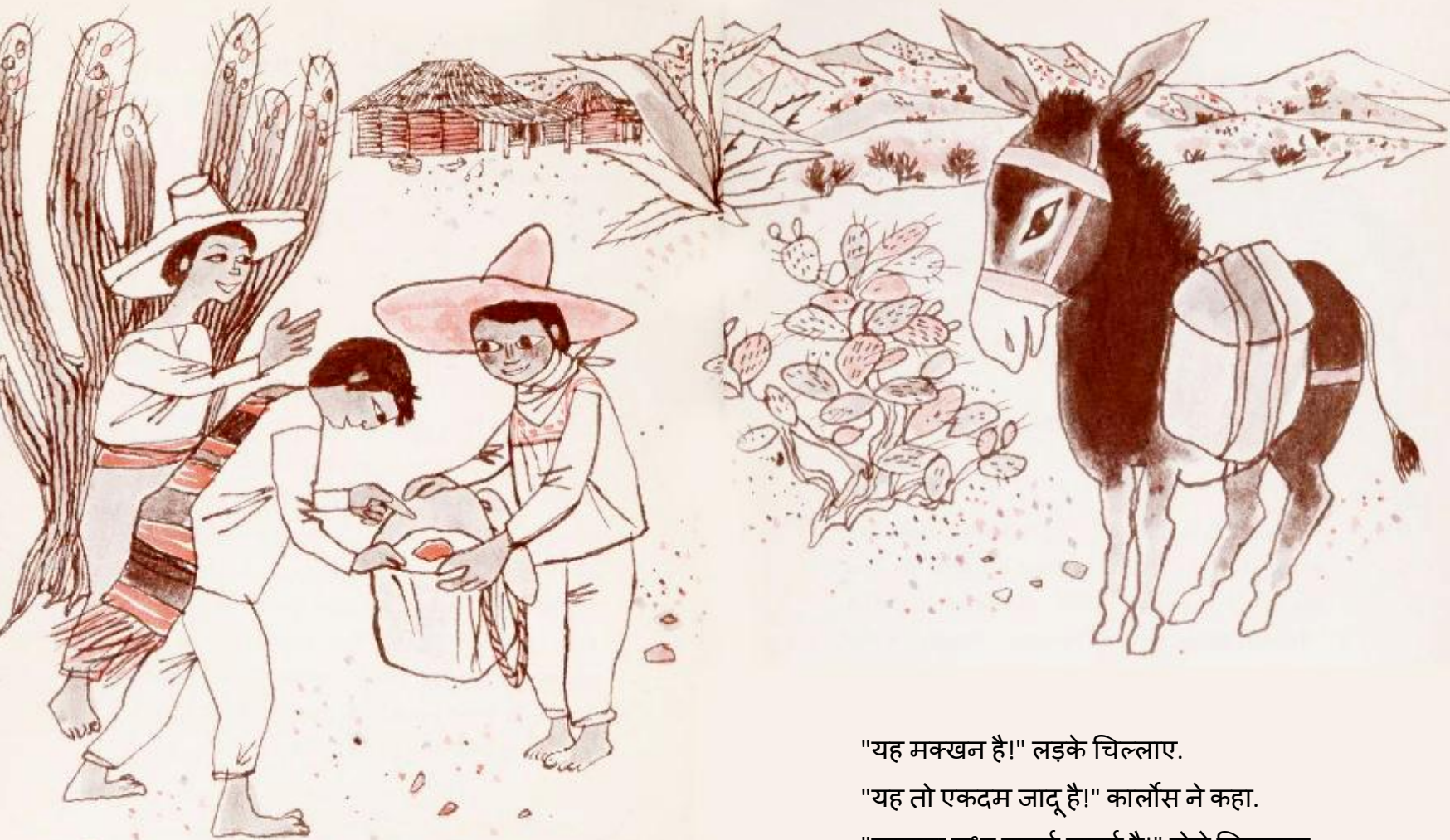
"यह मक्खन है!" लड़के चिल्लाए.

"यह तो एकदम जादू है!" कार्लोस ने कहा.

"तुम्हारा गधा वाकई जादुई है!" होसे चिल्लाया.

"हाँ," एल्फ्रेडो ने कहा. "मैंने तुम्हें बताया था कि पोलो एक जादुई गधा है." फिर उसने अपना छोटा शिकारी चाकू निकाला और दोनों मक्के की रोटियों पर थोड़ा-थोड़ा मक्खन लगाया. "मेरे जादुई गधे का बनाया मक्खन खाओ," उसने कहा. फिर उसने प्रत्येक लड़के को एक-एक मक्के की रोटी दी. कार्लोस और होसे बस मक्के की रोटियों को घूरते ही रहे.

"अब मैं अपनी दादी से मिलने जा रहा हूं," एल्फ्रेडो ने कहा और फिर वो और पोलो गर्व से दादी के बाड़े में घुसे.

समाप्त